कुलाधिपति के रूप में महामहिम कोविंद की भूमिका सराहनीय रही : गोयल

एक साक्षात्कार वीर कुंवर सिंह युनिवर्सिटी के प्रति कुलपति डा. प्रो. एम. एम. गोयल एवं केवल सच पत्रिका प्रतिनिधि मणि भूषण तिवारी के साथ :-

★ राष्ट्रपति पद का चुनाव होने वाला है, आपकी नजरों में किस तरह का राष्ट्रपति होना चाहिए?

केन्द्रीय विश्वविद्यालयों एवं अन्य राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों सहित उच्चतर शिक्षा के 126 केन्द्रीय संस्थानों के एक विजीटर के कर्तव्यों को पूरा करने के लिए हमें ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो उच्च शिक्षा की चुनौतियों को समझता हो और उच्च शिक्षा में गुणवता व मात्रा को संतुलित करने का जज्बा रखता हो। अध्यात्मिक दिवालियापन और शिक्षा के व्यवसायीकरण की वजह से उच्च शिक्षा के मानक आज बदल गये हैं और ऐसे में एक प्रशासक के रूप में भारत के राष्ट्रपति से अपेक्षा की जाती है कि इन मंदीरों की पवित्रता को बनाए रखें।

एक शिक्षाविद् के रूप में मेरा कर्तव्य बनता है कि मैं श्री रामनाथ कोविंद का समर्थन करूं जो बिहार के 15 विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति रह चुके हैं। कुलपति व प्रतिकुलपति के नियुक्ति संबंधित अत्यंत चुनौतिपूर्ण कार्य को उन्होंने विशुद्ध रूप से योग्यता के आधार पर बिहार के कुलाधिपति के रूप में पूर्ण किया था और वो भी राज्य सरकार से परामर्श लेकर। यह मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ। राष्ट्रीय समाचार पत्रों में विज्ञापन किया गया था। निर्देश दिया गया था कि उम्मीदवार किसी भी व्यक्ति विशेष से संपर्क मदद हेतु न करें अन्यथा उसकी उम्मीदवारी रद्द की जा सकती है। इस चेतावनी के साथ ऑनलाईन आवेदन करने को कहा गया था। मैंने निर्णय लिया कि मैं बिहार के पाँच विश्वविद्यालयों के लिए आवेदन करूँगा। लेकिन चयन समिति द्वारा केवल वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा के प्रति कुलपति के लिए नामित किया गया। इन नामित व्यक्तियों की सूचि में ज्यादातर विशेषज्ञ बिहार के बाहर से थे।

★ क्या आप उम्मीदवारों के टी.ए.डी.ए. नहीं देने से सहमत हैं?

मैं बिल्कुल सहमत हूँ। 12 फरवरी 2017 को पटना राजभवन में 15 उम्मीदवारों को बातचीत के लिए बुलाया गया। उम्मीदवारों को टी.ए./डी.ए. नहीं दिये जाने की बात की गई और इस बात से मैं सहमत भी हूँ, जिससे कि गैर गंभीर उम्मीदवारों का छँटनी संभव हो सका, जबकि अन्य राज्य के विश्वविद्यालयों द्वारा यह सेवा दी जाती है।

★ क्या आपका कभी राज्यपाल महोदय के समक्ष साक्षात्कार हुआ है?

बिल्कुल, मुझे 22 अप्रैल 2017 को चांसलर के साथ अंतर्वीक्षा के लिए एक पत्र और राजभवन के एक कॉल के बाद एक ई-मेल प्राप्त हुआ। फिर नीयत दिन को मैं राजभवन पहुँचा और राज्यपाल के समय बाध्यता के चलते बातचीत अपने निर्धारित समय पर प्रारंभ हुई। उन्होंने बिहार सहित भारत में उच्च शिक्षा के विभिन्न मुद्दों पर आधे घंटे से ज्यादा समय तक मुझसे बात की। महामहिम के प्रधान सचिव इसके साक्षी हैं। 29 अप्रैल 2017 को राज्यपाल के विशेष कार्य पदाधिकारी ने मुझसे बात की और उसके आधे घंटे के भीतर ही नियुक्ति की अधिसूचना जारी कर दी गई। अंतत: मैंने 1 मई 2017 को प्रति कुलपति के रूप में पदभार ग्रहण किया।

★ आप माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी के बातों से कितना सहमत है?

श्री कोविन्द जी ने कुलाधिपति के रूप में परीक्षा सुधार में काफी दिलचस्पी दिखाई, इसके लिए उन्होंने अथक प्रयास किया। कोविंद जी कुलाधिपति के रूप में काफी सराहनीय भूमिका में रहे और बिहार के विश्वविद्यालयों की जितनी भी शैक्षणिक और प्रशासनिक कमजोरियाँ थी, उसे दूर करने के लिए भी अथक प्रयासरत रहे। बिहार के मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री एवं उच्चाधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत करके यह प्रमाणित किया कि वे कुलाधिपति के तौर पर बिहार के विश्वविद्यालयों में अमूल परिवर्तन करना चाहते हैं। साथ ही शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों के 06 घंटे उपस्थिति को अनिवार्य करने हेतु सभी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में नवीन हाजिरी पद्धति बायोमेट्रिक्स लगाने का निर्देश दिया। यही कारण है कि बिहार के कर्मठ, ओजस्वी और दूरदर्शी मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने श्री कोविंद के अंतर्निहित गुणों को पहचान कर दलगत भावना से उपर उठकर राष्ट्रपति के पद पर मतदान करने का निर्णय लिया।